इकाई 8 औद्योगिक पूंजीवाद

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- **औद्योगिक** क्रांति की आधारभूत अवधारणाओं को समझ सकेंगे,
- **जान सकेंगे** कि औद्योगिक पूंजीवाद की प्रकृति के बारे में विभिन्न लेखक क्या कहते हैं, और
- **को इन** लेखकों की आलोचना और मूल्यांकन के माध्यम से औद्योगिक पूंजीवाद की प्रकृति के स्पष्टीकरण **में मदद** मिलेगी।

8.1 प्रस्तावना

इस इकाई में औद्योगिक पूंजीवाद की प्रकृति के संबंध में विभिन्न विचारों का अध्ययन किया गया है। औद्योगिक पूंजीवाद के उदय से पूर्व पूंजीवादी चरण में मौजूद उत्पादन प्रक्रिया की प्रकृति काफी हद तक बदल गई। इस परिवर्तन से समाज और अर्थव्यवस्था के कई पक्ष कई प्रकार से प्रभावित हुए। परिणामस्वरूप अनेक लेखकों ने अपने आलेखों में या तो इस परिवर्तन का एक पक्ष सामने रखा या कभी-कभी इसे गलत रूप में पेश किया। अभी भी हम इस परिघटना को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

8.2 औद्योगिक क्रांति और औद्योगिक पूंजीवाद

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में यूरोप में आधुनिक राजनीति के कई पक्ष आर्थिक जीवन के रूपांतरण से जुड़े हैं। औद्योगिक पूंजीवाद का विकास इस युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसका सीधा संबंध यूरोप में हुई औद्योगिक क्रांति से था।

औद्योगिक क्रांति की अवधारणा का तात्पर्य मूलतः खास प्रौद्योगिकी और आर्थिक परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक क्षेत्र में आनेवाले बदलाव से है। इसकी मुख्य विशेषता इस प्रकार है : i) उत्पादन में जल, वाष्प (और बाद में विद्युत) शक्ति का भारी मात्रा में प्रयोग, ii) कारखानों में उत्पादन का संकेंद्रण और मशीनीकरण, iii) 'घरेलू' और 'विदेशी' बाजारों की प्रकृति और दोहन में महत्वपूर्ण परिवर्तन, iv) जीवनयापन के लिए कृषि पर निर्भरता

की लगभग समाप्ति। यह औद्योगिक क्रांति का पहला चरण था जिसमें आर्थिक और सामाजिक जीवन में औद्योगिक पूंजीवाद का वर्चस्व था।

औद्योगिक पूंजीवाद में, उत्पादन के उद्योगों में पूंजी निवेशित की जाती है, श्रम की अपेक्षा निवेश का महत्व ज्यादा होता है और निवेश के बदले में मुनाफे के रूप में ज्यादा से ज्यादा धन कमाने का प्रयत्न किया जाता है। यह व्यापारिक पूंजीवाद या वित्तीय पूंजीवाद से अलग था क्योंकि उनका बल मुख्य रूप से क्रमशः वाणिज्यिक और वित्तीय लेन देन तक सीमित था; प्रंतु यह पूंजीवाद की उस प्रक्रिया और आर्थिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ था जिसमें आर्थिक गतिविधि मुनाफे का पर्याय बन गई थी। इसमें बड़ी मात्रा में भाड़े के मजदूरों को रखा जाने लगा था। यूरोप में औद्योगिक पूंजीवाद के बढ़ते प्रभाव निम्नलिखित विकासों से जुड़े हुए थे :

i) अठारहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इंगलैंड में हुई औद्योगिक क्रांति। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे :

- जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
- कृषि क्रांति, जिसका सीधा संबंध जनसंख्या वृद्धि और खेती में नई प्रौद्योगिकी और मशीनों के इस्तेमाल से था।
- कपड़ा, लोहा, और इस्पात उद्योगों में उत्पादन के लिए नई प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल
- कुटीर उद्योगों का धीरे-धीरे खात्मा और कारखानों में उत्पादन पर बल जहां इस पर कड़ी नजर रखी जा सकती थी।

ii) इंगलैंड से 'सीख लेकर' उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान फ्रांस और जर्मनी में उपर्युक्त वर्णित तरीके से ही इन दोनों देशों में औद्योगिक परिवर्तन हुए। इन दोनों ही देशों में मध्य उन्नीसवीं शताब्दी में रेलवे का निर्माण औद्योगिक पूंजी के विकास में निर्णायक सिद्ध हुआ था।

iii) उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्थापित औद्योगिक राष्ट्रों द्वारा रूस और हंगरी जैसे देशों में पूंजी निवेश के कारण औद्योगिक पूंजी का विकास

iv) उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में इन सभी देशों के लिए उपनिवेशों और अल्प विकसित क्षेत्रों का बाजारों के रूप में बढ़ता महत्व।

8.3 औद्योगिक पूंजीवाद के महत्वपूर्ण पक्ष

समकालीन और बाद के टीकाकारों के अनुसार औद्योगिक पूंजीवाद और क्रांति के परिणामस्वरूप एक ऐसा माहौल निर्मित हुआ जिसमें उद्योग को सुसंगत बनाया गया। यहां सुसंगति का मतलब उत्पादन पर पूरी तरह से नियंत्रण स्थापित करना था। पहले यह ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं था। इसके पहले भाड़े के मजदूर रखने की प्रथा नहीं थी और मजदूर एक जगह इकट्ठा होकर काम नहीं करते थे। इसलिए उस समय पूंजीपतियों के लिए कहीं एक स्थान पर अपने प्रभाव का इस्तेमाल करने का अवसर नहीं था।

इस प्रकार के परिवर्तन से उत्पादन लागत में कमी आई और जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता गया उत्पादन की प्रत्येक इकाई का खर्च कम होता गया। अब प्राकृतिक शक्तियों (जलवायु, आदि) पर निर्भरता कम हुई और पूरी उत्पाद् प्रक्रिया के बाजार से जुड़ जाने के कारण लोगों पर सूखे या महामारी का प्रभाव कम हो गया। मांग और उत्पाद् में हुए परिवर्तन के कारण पारिस्थितिकी संतुलन में भी मुख्य परिवर्तन हुए। संयुक्त राज्य अमेरिका और रूस में बड़े पैमाने पर जंगलों की कटाई की गई और जानवरों को मारा गया। आर्थिक गतिविधि व्यापारिक उतार-चढ़ाव से जुड़ गई जिसकी प्रकृति निवेश और उपभोग के अनुसार बदलती रहती थी। औद्योगिक पूंजीवाद की विशेषताओं के साथ-साथ आधुनिकता का भी आगमन हुआ जो परम्परागत जीवन और आर्थिक जीवन से बिलकुल अलग था।

8.4 औद्योगिक पूंजीवाद के अध्ययन संबंधी दृष्टिकोण

इन परिवर्तनों को लेखकों ने किस प्रकार समझा और आत्मसात किया ? आइए इसे समझने का प्रयास करें।

8.4.1 राजनैतिक अर्थव्यवस्था के आरंभिक लेखक

औद्योगिक क्रांति होने के साथ साथ पूंजीवाद की प्रक्रिया भी आरंभ हुई और इस ओर कई आर्थिक टीकाकार आकृष्ट हुए जो पहले की आर्थिक व्यवस्था के विरोधी थे जिसमें समृद्धि बढ़ाने के लिए राज्य के हस्तक्षेप की बात की जाती थी। वाणिज्यवादियों की आलोचना इसलिए की जाती थी क्योंकि वे समृद्धि के लिए विदेश व्यापार के नियमों में परिवर्तन करने के लिए राज्य के हस्तक्षेप की वकालत करते थे। फिजियोक्रेट्स की आलोचना इसलिए की गई क्योंकि उनका मुख्य सरोकार भूमि की उत्पादकता के विकास से था। एडम स्मिथ (1723-1719), डेविड रिकार्डो (1772-1823) और थॉमस राबर्ट माल्थस ने अर्थशास्त्र या राजनैतिक अर्थव्यवस्था पर लिखते हुए पूंजीवाद के लिए निर्णायक विविध ताकतों जैसे जनसंख्या, उद्यम, मांग, किराया, मुनाफा, राजनीति आदि का समुचित समन्वय पेश किया। इनमें से एडम स्मिथ ने अपने **इन्क्वायरी इनटू द नेचर एंड कॉजेज ऑफ द वेल्थ ऑफ नेशन्स** में वाणिज्यवाद और फिजियोक्रेसी की आलोचना की और वैल्यू इन यूज (उपयोग के मूल्य) और वैल्यू इन एक्सचेंज (विनिमय के मूल्य) पर आम विचार विमर्श करते हुए बेसिस ऑफ वैल्यू इन लेबर (श्रम में मूल्य का आधार) का विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने मानवीय कार्यकलापों में सरकार की सीमित भूमिका का समर्थन किया और कहा कि इसका हस्तक्षेप 'आमतौर पर नुकसानदेह' होता था। अपने समय के मुक्त व्यापार के समर्थक कई उदारवादियों के साथ उन्होंने भी **लैसेज फेयर** के सिद्धांत का समर्थन किया। स्मिथ ने यह स्वीकार किया कि जब व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए काम करता है तो सामाजिक असमानता पैदा होती है। परंतु उन्हें इस बात का विश्वास था कि इससे समग्र रूप में भौतिक समृद्धि बढ़ेगी और लोगों के बीच 'स्वस्थ्य' प्रतियोगिता के साथ-साथ 'सौहार्द' भी कायम रहेगा और लोगों के सामाजिक रिश्ते मजबूत होंगे।

स्मिथ के मुकाबले औद्योगिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के संबंध में रिकार्डो और माल्थस ज्यादा निराशावादी थे। रिकार्डो का कहना था कि उसे फ्रांसीसी चिन्तक गेरशेनकोन द्वारा प्रतिपादित 'कानून' में आस्था थी कि किसी देश में अति उत्पादन का संकट और पूंजी का आधिक्य असंभव था परंतु वे इस बात के प्रति भी समान रूप से आश्वस्त था कि किराए में तीव्रता से वृद्धि होने से उत्पादन बढ़ेगा और जनसंख्या में वृद्धि होगी जिससे आर्थिक संकट का आधार तैयार हो सकता है। दूसरी ओर माल्थस के अनुसार जनसंख्या की वृद्धि का सीधा असर विकास की गति पर पड़ेगा और अन्तत: यह समृद्धि पर रोक लगा देगी। इस प्रकार के विचारों के कारण जेरेमी वैंथेम के 'उपयोगितावादी' दृष्टिकोणों को बल मिला कि समृद्धि के लिए सरकार की कुछ न कुछ भूमिका अवश्य होनी चाहिए। 'अधिक लोगों की ज्यादा खुशी' के लिए यह जरूरी था क्योंकि यह कई बार कुछ लोगों के लोभ के कारण खतरे में पड़ सकता था।

स्मिथ की इस अवधारणा को, कि आय की असमानता के बावजूद समाज में समृद्धि रहेगी और विभिन्न वर्गों के बीच सौहार्द कायम रहेगा , समाजवादी लेखकों ने चुनौती दी जो अर्थव्यवस्था के इस विश्लेषण से सहमत नहीं थे और उनका नजरिया बिलकुल दूसरा था। सिसमंड डे सिसमंडी (1773-1842) के अनुसार पूंजीवादी विकास में उत्पादन तो तेजी से बढ़ता है किंतु इसमें असमानताएं भी बढ़ती हैं जिन्हें राज्य के हस्तक्षेप के बिना दूर नहीं किया जा सकता था। प्रोधोन (1809-1868) का मानना था कि असमानता से जुड़े अन्याय को आपसी समझौते से दूर किया जा सकता है या राज्य के प्रतिनिधि के रूप में स्वयं सेवी संगठन नियंत्रण स्थापित कर सकते हैं। कार्ल मार्क्स (1818-1883) ने कहा कि यह असमानता तब तक जारी रहेगी जब तक पूंजीवाद अन्तत: समाप्त नहीं हो जाएगा।

8.5 औद्योगिक पूंजीवाद के इतिहास पर कुछ विचार-I

इस प्रकार के लेखकों द्वारा (इन विचारों के संबंध में नव क्लासिकल विकास और जे. एम. कीन्स के कार्यों सहित) संघटकों या कारकों के संदर्भ में विकास की प्रकृति और विकास की समग्र पद्धति की समस्याओं पर अधिक विचार किया गया। इस प्रकार के लेखकों ने औद्योगिक पूंजीवाद से जुड़ी शब्दावलियों का तो निर्माण किया परंतु इसमें

आंकड़ा इकट्ठा करनें के लिए विभिन्न देशों के ऐतिहासिक अनुभव का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयत्न नहीं किया गया जिसका उपयोग यह जांचने के लिए किया जा सकता था कि सिद्धांत कितना व्यावहारिक था। बाद के आर्थिक इतिहासकार भी औद्योगीकरण के अतीत का विश्लेषण करने में लगे रहे और इसी के आधार पर पूरे विश्व के विकास के लिए कुछ प्रारूप प्रस्तुत किया। यूरोपीय इतिहास के संदर्भ में डब्ल्यू डब्ल्यू रोस्टो और एलेक्जेंडर ग्रेशेनकोन सबसे प्रमुख इतिहासकार थे।

8.5.1 रोस्टो

डब्ल्यू डब्ल्यू रोस्टो ने **स्टेंजेज ऑफ इकोनोमिक ग्रोथ** में कहा कि विकास पांच चरणों में हुआ है :

- परम्परागत समाज, जहां उद्योग और कृषि दोनों क्षेत्रों में आविष्कार होता है, परंतु ''प्रति व्यक्ति प्राप्त उत्पादन के स्तर'' की एक सीमा होती है।
- 'संक्रमणकालीन समाज,' 'ऐसा समय जब समाज के विकास का माहौल तैयार हो रहा होता है' 'जहां संक्रमण परिस्थितियों का परिणाम हो सकता है,' 'जहां कृषि और उद्योग में आधुनिक विज्ञान का नए उत्पादन कार्यों में उपयोग शुरू होता है,' जहां विश्व बाजारों का एक खास ढंग से विकास होता है और अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता का सामना करना होता है; अथवा आमतौर पर जहां 'घुसपैठ' होती है जिससे एक झटका लगता है जो आधुनिकता की ओर ले जाता है।
- प्रगति का यह चरण उस अंतराल का प्रतिनिधित्व करता है जब पुरानी बाधाओं और संरचनाओं पर अंतिम रूप से विजय प्राप्त कर ली जाती है। इस समय आधुनिक गतिविधियों को विस्तार मिलता है और समाज पर इसका प्रभाव बढ़ता जाता है और जहां विकास एक आम स्थिति हो जाती है। यंहां सकल घरेलू उत्पाद् औसतन लगभग 5 प्रतिशत से 10 प्रतिशत तक अवश्य बढ़ जाती है और इस समय अनिवार्य रूप से उद्योगों में बड़े पैमाने पर पुनर्निवेश और खेती में बड़े पैमाने पर बदलाव आता है। ब्रिटेन में 1783 के 20 वर्षों बाद यह स्थिति आई ; फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका में 1860 के पहले के दशकों में ; जर्मनी में 1850-1875 में, रूस और कनाडा में 1914 से पच्चीस वर्ष पूर्व यह स्थिति देखी जा सकती है।
- जब अर्थव्यवस्था अन्तरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का एक हिस्सा बन जाती है अर्थात जब अर्थव्यवस्था परिपक्व हो जाती है तब स्थापित और प्रमुख क्षेत्रों का महत्व कम होता है और निवेश तब सकल घरेलू उत्पाद् के 10-20 प्रतिशत के बीच होता है।
- सार्वजनिक उपभोग में बढोत्तरी, जहां अधिकाश संसाधनों को समाज कल्याण पर लगाया जाता है जहां अर्थव्यवस्था का बल प्रमुख क्षेत्रों से हटकर टिकाऊ उपभोक्ता वस्तुओं पर हो जाता है।

8.5.2 गेरशेनकोन

दूसरी ओर एलेक्जेंडर गेरशेनकोन ने **बैकवर्डनेस इन हिस्टौरिकल प्रसपेक्टिव** में विचार विमर्श करते हुए लिखा है कि 'पूर्व शर्त' या 'टेक ऑफ' जैसी कोई स्थिति नहीं होती है क्योंकि औद्योगीकरण में इनकी कोई स्पष्ट मौजूदगी नहीं होती। उनका मानना है कि औद्योगीकरण एक रास्ता दिखाता है परंतु उस रास्ते पर चलने के तरीके में काफी अन्तर हो सकता है। वे इस बात का भी विरोध करते हैं कि " औद्योगिक रूप से अधिक विकसित देश कम विकसित देश के लिए भविष्य की एक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं'' ; इसकी बजाय उनका मानना है कि ''एक पिछडा हुआ देश अपने पिछड़ेपन के बीच से ही बचाव का रास्ता निकालता है जो विकसित देश के रास्ते से बिल्कुल भिन्न होता है।''

एलेक्जेंडर गेरशेनकोन ने निम्नलिखित सुझाव दिए हैं :

- एक पिछड़े हुए देश की औद्योगिक प्रक्रिया विकसित देशों से भिन्न होती है ; औद्योगिक विकास और खासकर संगठन और उत्पादन की प्रकृति में यह अन्तर देखा जा सकता है।
- ये परिस्थितियां ''संस्थागत उपकरणों'' के अनुप्रयोग के परिणाम होते हैं जो औद्योगिक राष्ट्रों में देखने को नहीं मिलता है।
- औद्योगीकरण का बौद्धिक परिवेश बिलकुल अलग होता है
- 'राष्ट्र विशेष की प्राकृतिक औद्योगिक क्षमता और पिछड़ेपन का स्तर अलग-अलग होता है और इनका प्रभाव भी अलग-अलग होता है।''

गेरशेनक्रोन का मानना है कि नए बैंकिंग नेटवर्क और राज्य का हस्तक्षेप 'संस्थागत उपकरण' है जो यूरोप के 'पिछड़े' राज्यों में औद्योगीकरण के लिए निर्णायक है। इसलिए नेपोलियन III के शासन काल के दौरान फ्रांस में औद्योगिक बैंकिंग के नए रूप का विकास हुआ जिसने स्थापित धन की दिशा बदल दी और बैंकिंग का एक प्रारूप स्थापित किया जिसका बाद में पूरे यूरोपीय महाद्वीप में तेजी से विकास हुआ। जर्मनी में इस प्रारूप ने नई दिशाएं ग्रहण कीं। दूसरी ओर रूस में, असक्षम होने के बावजूद राज्य ने सेना के हितों को पूरा करने के लिए औद्योगीकरण का रास्ता अख्तियार किया।

बोध प्रश्न 1

1) 'औद्योगिक पूंजीवाद' से आप क्या समझते हैं ?

....

....

....

....

....

....

2) फिजियोक्रेट्स और वाणिज्यवादियों की आलोचना एडम स्मिथ किस आधार पर करते हैं ?

....

....

....

....

....

....

3) गेरशेनक्रोन क्यों कहते हैं कि औद्योगीकरण के लिए कोई खास 'टेक ऑफ' चरण नहीं होता ?

....

....

....

....

....

....

8.6 औद्योगिक पूंजीवाद के इतिहास पर कुछ विचार-II

रोस्टो और गेरशेनक्रोन के दृष्टिकोण ने आलोचनाओं को प्रेरित किया। अर्थशास्त्रियों के विपरीत उन्होंने औद्योगिक पूंजीवाद के विकास को समझने के लिए एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष प्रदान किया है। हालांकि इस दृष्टिकोण के प्रमुख तत्वों और काल निर्धारण को आसानी से न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता। उदाहरण के लिए रोस्टो ने प्रगति के आरंभ की जो पूर्व शर्तें बताई थीं उनमें से अधिकांश प्रगति के आरंभ की ही विशेषताएं हैं। अतः यह प्रश्न सामने आता है कि इन दोनों चरणों में क्या अन्तर है ? मार्केविसकी ने फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था को सामने रखते हुए बताया है कि रोस्टो द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार वहां प्रगति के आरंभ का कोई निश्चित काल नहीं दिखाई पड़ता जबकि 19वीं शताब्दी के अंत तक इस अर्थव्यवस्था को गैर औद्योगिक अर्थव्यवस्था नहीं माना जा सकता था। रोस्टो के समान गेरशेनक्रोन के दृष्टिकोण की इतनी आलोचना नहीं हुई क्योंकि उन्होंने कुछ संभाव्य पद्धतियों तक ही अपने को सीमित रखा। हालांकि उनकी यह विनम्रता उनकी कमजोरी और सीमा को स्पष्टता से उजागर करती है क्योंकि इससे यह नहीं पता चलता है कि जिन पद्धतियों

की वे बात करते हैं उनका आगे क्या सामान्य या व्यापक अनुमान होगा। वे खुद आस्ट्रो-हैंगेरियन साम्राज्य स्पेन, इटली, या रोमानिया में इन पद्धतियों की पुनरावृत्ति नहीं देखते हैं; हां कहीं-कहीं समानता के कुछ बिंदु दीख जाते हैं।

एक ग़ौरतलब बात यह है कि औद्योगिक पूंजीवाद का अध्ययन इसके स्पष्ट रूप से आगमन के पूर्व ही शुरू हो चुका था और उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व वाणिज्यिक पूंजीवाद की बात होने लगी थी जिसने 'औद्योगिक क्रांति' के काल में विकास से लोगों का ध्यान हटा दिया था। इस प्रकार के सरोकारों को मुख्य रूप से फर्नैन्ड ब्रौडेल द्वारा **कैपिटलिज्म ऐंड मैटेरियल लाइफ** में किए गए विचार-विमर्श और **प्रोटो-इन्डस्ट्रियलाइजेशन** में लिखे लेख से लोकप्रियता मिली जो पीटर क्रिएडेट, हैन्स मेडिक और जुरगेन शमबॉम की पुस्तक **इंडस्ट्रीयलाइजेशन बिफोर इंडस्ट्रीयलाइजेशन** (प्रथम संस्करण 1977) में प्रकाशित हुआ था। इमैनुअल वाल्लरस्टेन ने 'वर्ल्ड सिस्टम' और द कैपिटलिस्ट वर्ल्ड इकोनोमी की अपनी चर्चा में भी इस पर प्रकाश डाला है। ब्रौडेल और वाल्लरस्टिन दोनों ही आंरभिक आधुनिक यूरोप में रुचियों के परिष्कार की बात करते हैं और बताते हैं कि नई मांग के अनुसार नए उत्पाद सामने आए ; ये मांगे ऐसी थीं जिन्हें उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन कर यूरोपीय बाजार को विश्व के अन्य बाजारों से जोड़कर ही पूरा किया जा सकता था। पन्द्रहवीं शताब्दी से और स्पष्ट तौर पर सोलहवीं शताब्दी के मध्य से से ही यूरोप में पूंजीवाद का धीरे-धीरे विकास होने लगा था (वाल्टरस्टिम के अनुसार)। औद्योगीकरण के प्रारंभिक रूप (प्रोटो-इन्डस्ट्रीयलाइजेशन) का अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों ने अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के औद्योगिक पूंजीवाद के रूप में आई नई विशेषताओं को रेखांकित किया परंतु उनका विशेष बल इस 'व्यवस्था' की प्रकृति अर्थात व्यवस्था में आए बदलाव पर था। 'प्रारंभिक औद्योगीकरण' के इस चरण का संबंध कुटीर या घरेलू उद्योग के साथ जोड़ा गया जिस पर जर्मनी में राजनैतिक अर्थव्यवस्था की ऐतिहासिक विचारधारा (हिस्टौरिकल स्कूल ऑफ पोलिटिकल इकोनोमी) के विद्वानों ने विस्तार से चर्चा की थी (ए. शैफेल और डब्ल्यू रोशर)। वारनर सोमबार्ट ने बाद में उभरने वाले पूंजीवाद के लिए महत्व स्थापित करते हुए बताया कि "घरेलू उद्योग का इतिहास पूंजी का इतिहास है। घरेलू उद्योग के वेश में पूंजी धीरे-धीरे विकास करता रहा है और अपने आप एक आर्थिक क्षेत्र विकसित किया।" फ्रैंकलिन एफ. मेन्डेल्स और चार्ल्स और रिचार्ड टिलि ने आरंभिक औद्योगीकरण पर विचार विमर्श किया और बताया कि "इसका विकास ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के साथ जुड़ा हुआ है जिसमें अधिकांश जनसंख्या क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, और अन्तरराष्ट्रीय बाजारों के लिए बड़े पैमाने पर "हो रहे उत्पादों पर पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से आश्रित होती थी।"

इस प्रकार के विवेचनों से औद्योगिक पूंजीवाद के आरंभ पर हो रहे विचार विमर्श से ध्यान हटा और पूंजीवाद के सतत विकास संबंधी ढांचे पर ज्यादा बल दिया जाने लगा। इस प्रकार रोस्टो और गेरशेनक्रोन की पूर्व शर्तों की मान्यता काफी हद तक कम हो गई।

8.7 औद्योगिक पूंजीवाद के इतिहास पर कुछ विचार-III

अभी हाल में पूंजीवाद के उन पक्षों का विवेचन किया गया जो निस्संदेह औद्योगिक पूंजीवाद के इस चरण और बाद में वित्तीय पूंजीवाद के लिए काफी महत्वपूर्ण था। यहां मुख्य बिंदु पूंजीवाद का सामाजिक और सांस्कृतिक परिणाम हैं; परंतु इन लेखकों ने सामाजिक इतिहासकारों से बिलकुल अलग ढंग से विचार किया जिन्होंने औद्योगीकरण के कामगार वर्ग की कठिनाइयों पर दुख प्रकट किया। इस संदर्भ में डेरेक सेयर के कार्य का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा। इससे औद्योगिक पूंजीवाद के संबंध में हाल के टीकाकारों के सरोकारों को समझने में मदद मिलेगी। सेयर ने पूंजीवाद पर कार्ल मार्क्स के आर्थिक विश्लेषणों और मैक्स वेबर के सामाजिक विश्लेषण के वृहद परिणामों पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। सेयर के लेखों से पता चलता है कि औद्योगिक पूंजीवाद और आमतौर पर पूंजीवाद (ब्रॉडेल जिस तरीके से इसका विश्लेषण करता है) से 'आधुनिकता' और 'आधुनिकता' की पूर्व शर्तों का जन्म हुआ; और उन्होंने उस 'आधुनिकता' की प्रकृति के बारे में भी लिखा है। निस्संदेह इसका परिणाम औद्योगिक पूंजीवाद के रूप में सामने आया जिसे आर्थिक संक्रमणों और इसके सीमित परिणामों से शुद्ध रूप में जोड़कर नहीं देखा जा सकता। दीर्घ अवधि में भी ऐसा संभव नहीं है। यह व्यापक विकासों का ही एक अंग हैं।

शेयर बताते हैं कि मार्क्स पूंजीवाद को विशेष तौर पर आर्थिक विशेषताओं से नहीं जोड़ते हैं। इसके बजाय मार्क्स का सोचना है कि यह एक विकास का चरण है जो एक ऐसी स्थिति पर विजय प्राप्त करता है जहां 'व्यक्ति महान दिख सकता है' लेकिन 'व्यक्ति या समाज किसी का भी मुक्त और पूर्ण विकास संभव नहीं है'। मजदूरी के महत्व पर बल देते हुए और आम 'उपभोक्ताकरण को पूंजीवाद की निर्णायक विशेषता मानते हुए मार्क्स के अनुसार इस प्रकार के पूंजीवाद की सबसे खासियत यह होती है कि यह समाज के लगभग सभी तबकों को प्रभावित करता है। एक बार प्रक्रिया आरंभ होने के साथ ही यह भौतिक उत्पादन प्रक्रियाओं और सामाजिक संबंधों (जिस पर वह आधारित होता है) को पूर्ण रूप से बदल देता है। पहले चरण में निर्माण क्षेत्र में परिवर्तन हुआ (मध्य सोलहवीं. अठारहवीं शताब्दी के अंतिम तिहाई तक) जहां 'पूंजी ने उत्पादन के सामाजिक संबंधों को बदल दिया परंतु इससे उत्पादन प्रक्रिया के भौतिक स्वरूपों में कोई आधारभूत परिवर्तन नहीं किया गया' ; शिल्पियों कों एक छत के नीचे बिठा दिया गया ताकि श्रम अनुशासित ढंग से हो सके। उत्पादन में सहकारिता भाव शामिल था, इस अर्थ मे कि कार्यशाला और समाज में विस्तारित श्रम विभाजन दिखाई पड़ता था ; और यह प्रतियोगितापूर्ण था। इस चरण में इस प्रकार की प्रक्रियाएं 'कमोबेश आकस्मिक थीं' परंतु आधुनिक उद्योग के अगले चरण में ये प्रक्रियाएं 'नियम' बन गईं और रूपांतरण इस तरह हुआ कि श्रम पूंजी का दास बन गया। इस रूपांतरण में व्यक्तिगत महत्व और नागरिकता का भ्रम-जाल महत्वपूर्ण निर्णायक साबित हुआ। 'चीज' (या वस्तुएं) सभी संबंधों के लिए निर्णायक सिद्ध होने लगीं ; सभी चीजों का 'उपयोग मूल्य' उसके 'विनिमय मूल्य' से आंका जाने लगा। सेयर मार्क्स के उस विचार की ओर इशारा करते हैं जहां आर्थिक रूपांतरण सीमित रूप में होता दिखाई देता है : "...............विनिमय मूल्य में व्यक्तियों का सामाजिक रवैया वस्तुओं के सामाजिक रवैये में रूपांतरित हो गया; व्यक्तिगत सामर्थ्य को वस्तुओं के सामर्थ्य की तराजू पर तौला जाने लगा। विनिमय के साधनों की सामाजिक शक्ति जितनी कम होती है वह श्रम के तत्काल उत्पाद् की प्रकृति और अपने से उतनी ही गहराई और करीब से जुड़ा होता है। 'जहां सामूहिक शक्ति मजबूत होती है वहां लोग एक दूसरे से जुड़े होते हैं, पारिवारिक और पैतृक संबंध बरकरार रहता है, सामुदायिक परम्परा कायम रहती है, सामंतवाद और श्रेणी व्यवस्था कायम रहती है।'

शेयर बताते हैं कि इन विचारों से बहुत दूर तक सहमत होने के बावजूद मैक्स वेबर, माइकल फॉकॉल्ट या नोबर्ट एलियस जैसे बाद के लेखक इन वृहद सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रूपांतरण के कारकों के संबंध में अपना अलग मत रखते हैं। इसे 'आधुनिकता' या 'पूंजीवाद' कहने से कोई फर्क नहीं पड़ता है यदि मार्क्स के लिए यह जटिल आर्थिक प्रक्रिया का उत्पाद् है तो वेबर के लिए यह सांस्कृतिक प्रक्रिया का परिणाम है जो आर्थिक परिणामों को अलग नहीं हटाती बल्कि उसे आधारभूत मानती है। यह सांस्कृतिक प्रक्रिया आकलन के अतिरिक्त मोह से ग्रसित है जिसे कारण के रूप में परिभाषित किया गया है। इसी प्रकार माइकल फॉकॉल्ट के अनुसार यह समाज के तर्कमूलक प्रतिमान परिवर्तन का परिणाम है जो पूंजीवाद और आधुनिकता के लिए जरूरी था। इसी प्रकार नोबर्ट एलियस के अनुसार यह समाज में व्यक्तियों का व्यक्तिगत अनुशासन है। सेयर का मानना है कि जैसे-जैसे इतिहासकारों ने औद्योगिक पूंजीवाद के बारे में लिखना शुरू किया वैसे-वैसे इन दृष्टियों में भी परिवर्तन आया।

बोध प्रश्न 2

1) प्रोटो इन्डस्ट्रियलाइजेशन (आरंभिक औद्योगीकरण) से आप क्या समझते हैं ?

....

....

....

....

....

2) क्या औद्योगिक पूंजीवाद को मात्र आर्थिक संक्रमण से जोड़ा जा सकता है ?

....

....

....

....

....

8.8 सारांश

इस इकाई में आपने देखा कि :

- औद्योगिक पूंजीवाद एक सामाजिक रूपांतरण है जिसमें उत्पादन के क्रम में मजदूरों को पूंजी का दास बना दिया गया। इस स्थिति में सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं का सारा माहौल रूपांतरित हो गया,
- समय-समय पर विभिन्न लेखकों ने औद्योगिक पूंजीवाद को समझने के कौन-कौन से प्रयास किए,
- इन लेखकों के मूल्यांकन की आलोचना इस आधार पर की गई कि औद्योगिक पूंजीवाद में मूल्य किस प्रकार सृजित किया जाता है और इस प्रकार की संरचना किस प्रकार संकट से गुजरती है।

8.9 शब्दावली

इकोनोमी ऑफ स्केल : निर्माण की ऐसी प्रणाली जहां वस्तुओं का बड़े पैमाने पर उपयोग होता है। यह हस्तशिल्प या कुटीर उद्योग से बिलकुल अलग होता है जहां वस्तुओं का उत्पादन सीमित होता है, क्योंकि वहां बड़े पैमाने पर उत्पादन करने के लिए प्रौद्योगिकी का अभाव होता है।

लैसेज फेयर : राष्ट्रों के बीच व्यापार की व्यवस्था जहां निर्यात और आयात पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं होता।

फिजियोकेट्स : जे क्वेसने के नेतृत्व में राजनैतिक अर्थव्यवस्था पर लिखने वाले लेखक जिनका मानना था कि किसी राष्ट्र की समृद्धि भूमि की उत्पादकता पर निर्भर करती थी इन लेखकों का मानना था कि कृषि द्वारा पूंजी और श्रम के संचालन से आर्थिक विकास संभव हो सकता है। चूंकी कृषि के समान औद्योगिक और व्यापारिक गतिविधि प्रकृति के उपहार नहीं थे इसलिए इनका स्थान गौण था और इन पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जा सकता था क्योंकि यह समृद्धि कृषि से प्राप्त की गई थी। इस प्रकार फिजियोक्रेट्स के विचारकों और लेसेजफेयर के विचारकों के बीच एक समान कड़ी मौजूद थी।

स्वयंसेवी संगठन : ऐसे समूह जो अपनी मर्जी से इसके सदस्य बनते हैं न कि किसी समुदाय धर्म आदि के सदस्य होने के नाते।

8.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 8.2। इसे पढ़कर आप इसमें इस विचार को आगे बढ़ा सकते हैं कि औद्योगिक पूंजीवाद किस प्रकार एक सामाजिक रूपांतरण है जिसमें निर्माण की प्रकिया केंद्र में है।
2) देखिए उपभाग 8.4.1। इसमें आप बताइए कि किस प्रकार स्मिथ ने श्रम में मूल्य की पहचान की।
3) देखिए उपभाग 8.4.2। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए आप गेराशेनकोन के उस विचार को विस्तार दीजिए जिसके अनुसार औद्योगीकरण का कोई एक समान और सीधा रास्ता नहीं है।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 8.6। औद्योगीकरण का चरण कुटीर या घरेलू उद्योग से जुड़ा हुआ है।
2) देखिए भाग 8.7। मार्क्स, सोमबार्ट, और वेबर के विचार उपयोगी हैं।